हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध पंक्तियाँ

By:– डॉ. मानव सर

1. याद रखो, मुक्ति कभी अकेले नहीं मिलती, यदि वह है तो सबके साथ है । –मुक्तिबोध
2. कविता अपना वक्तव्य स्वयं देती है ,कवि की वकालात उसके लिए जरूरी नहीं। – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
3. आगे के कवि रीझी है,तो कविताई , न तो राधिका कन्हाई सुमरन को बहानो है – भिखारीदास
4. रावरै रूप की रीति अनूप , नवौ –नवौ लागत ज्यौं –ज्यौं निहारिए... – घनानंद
5. जपो निरन्तर एक जवान , हिन्दी , हिन्दू , हिन्दुस्तान। – प्रताप नारायण मिश्र
6. कौन करैजो नहि कसकत ,सुनि विपति बाल–विधवन ..... – प्रताप नारायण मिश्र
7. दुख की पिछली रजनी बीच ,विकसता सुख का नवल प्रभात..... – कामायनी , जयशंकर प्रसाद
8. जो घनीभूत पीड़ा थी ,मस्तक में स्मृति सी छाई
   दुर्दिन में ऑसु बनकर , वह आज बरसने आई ..... – ऑसू , जयशंकर प्रसाद
9. तुम वहन कर सको ,जन मन में मेरे विचार ,
   वाणी मेरी ,चाहिए क्या तुमको अलंकार..... – सुमित्रानंदन पंत
10. ''दुख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है , जो सारे संसार को सूत्र में बॉध रखने की क्षमता रखता है''। –महादेवी वर्मा
11. ये कान्य कुब्ज कुलांगार , खाकर पत्तल में करे छेद ..... –सरोज स्मृति , निराला
12. है अमा निशा उगलता गगन घन अंधकार ,
    खो रहा दिशा का ज्ञान , स्तब्ध है पवन चार ..... – राम की शक्ति पूजा ,निराला
13. हम दीवानों की क्या हस्ती , है आज यहॉ कल वहॉ चले..... – भगवती चरण वर्मा
14. योनि नही है रे नारी ,वह भी मानवी प्रतिष्ठित ..... – सुमित्रानंदन पंत
15. सिंहासन खाली करो कि जनता आती है ..... – दिनकर
16. प्रभु , पर तुम तो केवल पथ हो , चलना तो हमको ही होगा ..... – द्यर्मवीर भारती
17. एक अचम्भा सुना रे भाई ,ठाडा सिंह चरावै गाई , जल की मछली तरवर ब्याही,कुत्ता कूॅ ले गई बिलाई
    कबीर तेरी उल्टी बानी ,बरसे कम्बल भीगे पानी , सागर में मीन पियासी,मोहे सुन–सुन आवै हॉसी.. . – कबीर की उलटवासी
18. सक्तन को कहा सीकरी से काम
    आवत जात पन्हैया घिस गई , बिसरि गयौ हरि नाम..... – कुम्भनदास
19. कौन गनै पुर वन नगर , कामिनी एकै रीति ..... – देव
20. दधि , घृत , मधु ,पायस , तजि , वायस चाम सुहात..... – देव
21. 'जीवन की रसिकता से जब रीतिकालीन कवि लोग घबरा उठे तो राधा–कृष्ण का यही अनुराग उनके धर्म भीरू मन को आश्वासन देता होगा ।' – डॉ. नरेन्द्र
22. कनक छरी सी कामिनी , काहे को कटि छीन ,..... – आलम
23. नैनन में जो सदा रहते , तिनकी अब कान कहानी सुन्यौ करै..... /कंकर बैठि चुन्यौ करै – आलम
24. कटि को कंचन काटि के , कुचन मध्य धरि दीन..... – शेख रंगरेजिन
25. जब हार पहार से लागत है , अब आनि के बीच पहार परे..... – घनानंद

26. जान मिले तो जहान मिलै , नहि जान मिलै तो जहान कहा को..... – बोधा
27. यह प्रेम को पंथ कराल महा , तलवार की धार पै धावनौ है..... – बोधा
28. मितर सिपाही हम उन रजपूतन के ,.....हम कवि राज है पै चाकर चतुर के..... – ठाकुर
29. ढेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच , लोगन कवित्त कीन्हों खेलि कर जानो है ..... – ठाकुर
30. रोबहु सब मिली आवहु भारत भाई , हॉ!हा!भारत दुर्दशा देखी न जाई .... – भारत दुर्दशा नाटक , भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
31. वन्दनीय वह देश , जहॉ के वासी निज अभिमानी हो..... – श्रीधर पाठक
32. सत सेवा व्रत धार जगत के हरो क्लेश तुम , देश प्रेम में करो प्रेम का अभिनिवेश तुम – श्रीधर पाठक
33. ज्ञान दूर है किया भिन्न है ,इच्छा हो क्यों पूरी मन की,यक दूसरे से न मिल सके ,यह विडम्बना है जीवन की–कामायनी,प्रसाद
34. सारांश यह है कि जिस समय मुसलमान भारत में आए , उस समय धर्माभाव का बहुत कुछ हास हो गया था । परिवर्तन के लिए बहुत कुछ कड़े धक्कों की आवश्यकता थी। – रामचन्द्र शुक्ल
35. '' इसके साथ ही मनुष्यत्व की सामान्य भावना को आगे करके निम्न श्रेणी की जनता में उन्होंने आत्मगौरव का भाव जगाया और भक्ति के ऊँचे से ऊँचे सोपान की द्वारा अंतस्साधना में रागात्मिका 'भक्ति' और 'ज्ञान'का योग हुआ पर 'कर्म' की दशा वही रही जो नाथपंथियों के यहॉ थी । '' – रामचन्द्र शुक्ल
36. हरि हो पढ़ि आए राजनीति – सूरदास
37. मो मन गिरधर पै छवि अटक्यौ – कृष्णदास
38. बसौ मेरे नैनन में नंदलाल – मीराबाई
39. कहा करौ बैकुण्ठहि जाई – परमानंद दास
40. अनुखन माधव माधव सुमिरित सुंदर भेलि मधाई – विद्यापति
41. माधव हम परिनाम निरासा..... – विद्यापति
42. जदपि सुजाति सुलच्छनी , सुबरन सरस सुवृत्त , भूषण बिनु न बिराजई , कविता बनिता मित्त – केशव
43. बासर की सम्पत्ति उलुक ज्यों न चितव – केशव चन्द्रमखी मृगलोचनी बाबा कहि कहि जाय – केशव
44. अरुणागत अति प्रात पद्मिनी , प्राननाथ भय – केशव
45. उत्तम जाति है ब्राह्मनी देखत चित्त लुभाय – रहीम
46. सुरतिय नरतिय नागतिय.....गोद लिए हुलसी फिरै , तुलसी सो सुत होय – रहीम
47. तुलसी गंग दुइ भयै , सुकविन के सरदार – भिखारीदास
48. देखे मुख भावै , अनदेखेई कमल चन्द – केशव
49. मानुष प्रेम भयउ बैकुंठी .... पद्मावत , जायसी
50. दुलहिनी गावउं मंगालचार..... – कबीर
51. कहा मानसर चाह सो पाई , पारस रूप इहॉ लगि आई । – जायसी
52. मानस प्रेम भयउं बैकुण्ठी / बूझि लेहु जो बूझेहि पारहु । – जायसी
53. प्रभु हौं पतितन को टीका / हौं हरि सब पतितन को नायक /चरण कमल बन्दौ हरिआई – सूरदास
54. मो सम कुटिल कौन खल कामी.... – सूरदास
55. भरौसो दृढ़ इन चरनन को ..... – तुलसी
56. गोरख जगायो जोग , भक्ति भगायो भोग .. – तुलसीदास
57. केशव कहि न जाइका कहिये – तुलसीदास
58. अब लौ नसानी अब ना नसेहौ ..... – तुलसीदास
59. अजगर करै न चाकरी , पंछी करै न काम – मलूकदास
60. प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी.... – रैदास

61. कबीर कानि राखि नही वर्णाश्रम षटदर्शनी – नाभादास
62. सूर कवित्त सुनि कौन कवि ,जौ नहि सिर चालन करै – नाभादास
63. निर्गुण ब्रह्म को कियो समाधु , तब ही चले कबीरा साधु – दादू
64. अपना मस्तक काट के , वीर हुआ कबीर – दादू
65. कब घर बैठ रहै ,नाहि न हाट बाजार , मधुमालती ,मृगावती पोथी दोउ उचार – बनारसीदास
66. विक्रम धंसा प्रेम के बारा , सपनावती कहं गयउ पतारा – मंझन
67. रुकमिनी पुनि वैसहि मरि गई ,कुलवंती सत सों सति भई – कुतुबन
68. बलदीप देखा अँगरेजा , वहाँ जाई जेहि कठिन करेजा – उसमान
69. जानत है वह सिरजन हारा , जो कछु है मन मरम हमारा – नूर मोहम्मद
70. दुलहिनी गावहु मंगलाचार , हम घर आए हो राजा राम भरतार – कबीर
71. कलि कुटिल जीव विस्तार , हित वाल्मिकी तुलसी भयौ – नाभादास
72. लोटा तुलसीदास को , लाख टका मेरो मोल – होलराय
73. कहे बिनु रह्यौ न परत ,कहे राम !रस न परत – तुलसी
74. स्वस्ति श्री तुलसी कुलभूषण दूषण हरन गोसाई ,बारहि बार प्रनाम करहुं , अब हरहु सोक समुदाई... – मीराबाई
75. या लकुटि अरू कामरिया पर ..... /मोर पखा सिर ऊपर राखिहौ ...../ शेष महेश गनेश दिनेश... – रसखान
76. जब ते प्रीति श्याम ते कीनी , ता दिन तै मेरे इन नैननि नेकहुँ नींद न लीनी – परमानंद दास
77. जे नर दुख में दुख नहिं मानै – नानक
78. बौलिहै तौ जब तब बोलिवै की बुद्धि होय, ना तौ मुख मौन गहि चुप होय रहिये – सुन्दर दास
79. आरती कीजै हनुमान लला की..... – रामानन्द
80. आरती जय जगदीश हरै – श्रद्धाराम फुल्लौरी
81. कलि कुटिल जीव निस्तारहीन बाल्मिकी तुलसी भयौ – नाभादास
82. मन रै परसि हरि के चरन – मीराबाई
83. यह सिर नवै राम कू , नाहि गिर्यौ टूट ,आन देव नहि परसये यह तन जायो छूट .... – चरनदास
84. पुष्टिमार्ग कौ जहाज जातु है , जो कछु लेनो होय सो लेहु..... विठ्ठलदास ने कहा सूरदास की मौत से पूर्व
85. गौरी सोवे सेज पर ,मुख पर डालै केश ,चल खुसरो घर आपणै ,रैण भई चहुँ देस –अमीर खुसरो,
86. यदि प्रबन्ध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है ,तो मुक्तक काव्य एक चुना हुआ गुलदस्ता है – रामचंद्र शुक्ल
87. झूठ की सचाई छाक्यौ,त्यौं हित कचाई पाक्यौ – बोधा
88. बिहारी सतसई सैंकड़ो बर्षो से रसिको का ह्रदय हार बनी हुई है ,और तब तक बनी रहेगी जब तक संसार में सह्रदयता है । – हजारी प्रसाद द्विवेदी
89. प्रवृत्ति का परिष्कार व विकृति का बहिष्कार ही संस्कृति है – हजारी प्रसाद द्विवेदी
90. मै नहीं समझता कि इसकी(बिहारी सतसई)की तुलना का कोई भी ग्रंथ यूरोप में है – जार्ज ग्रियर्सन
91. लोग है लागि कवित्त बनावत , मोहि तो मेरे कवित्त बनावत – घनानंद
92. कुंदन कौ रस फीकौ लागै,झलके अति ऑगन चारू गोराई – मतिराम
93. कबहुं न भडुआ रन चढ़ै , कबहुं न बाजि बंब..... – गंग कवि जहाँगीर के प्रति
94. देखि सुदामा की दीन दशा ,करुना करके करुनानिधि रोये – सुदामाचरित, नरोत्तम दास
95. कौन के सुत ? बालि के , वह कौन बालि ?,न जानिये ? – रामचंद्रिका , केशवदास
96. सुबरन को ढूँढ़त फिरै , कवि , व्याभिचारी चोर – केशवनाथ
97. दारा की दौर यह , रार नहीं खजुबै की – भूषण
98. इन्द्र जिमि जम्भ पर , बाडव सुअम्भ पर , रावण सदम्भ पर रघुकुल राज है – भूषण
99. मोटी भई चंडी ,बिन चोटी के चबाय सीस , खेटी भई संपति चकत्ता के घराने की – भूषण

100. अभिधा उत्तम काव्य है , मध्य लक्षणा हीन ,अधम व्यंजना रस बिरस , उलटी कहत नवीन... – देव
101. डार द्रुम पलना बिछौना वन पल्लव क ..... –देव का प्रकृति चित्रण
102. जपमाला छापा तिलक, सरै न एकौ काम..... – बिहारी
103. अति सूधो सनेह को मारग , जहॉ नेकु सयानप बरंकु नहि ,
तुम कौन सी पाटि पढ़ै हो लला , मन लेहु न देहु छटॉक नहि – घनानंद
104. फागु की भीर अभीरन में , गहि गोविन्द लै गई भीतर गौरी – पद्माकर
105. कैतो करौ कोई ,पैए करम लिखोई , तातै ,दूसरि न होई , उर सोई ठहराइये – सेनापति
106. अमिय हलाहल मद भरै , स्वेत स्याम रतनार..... – रसलीन
107. भलै बुरै लो एक सम.....जानि परत है काक पिक , ऋतु बसन्त के मांहि – वृंद
108. जहॉ कलह तहं सुख नही , कलह सुखन को सूल..... – नागरीदास
109. भीतर–भीतर सब रस चूसै ,हंसि हंसि के तनम न धन मूसै
जाहिर बातन में नहिं तेज , क्यों सखि साजन नहिं अंगरेज – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
110. पूरी अमी सी कटोरिया सी,चिरजीवौ विक्टोरिया रानी....समस्या पूर्ति करने पर 'सुकवि'उपाधि दी –अम्बिकादत्त व्यास
111. हम कौन थे ,क्या हो गये, और क्या होंगे अभी..... – भारत–भारती,मैथिलीशरण गुप्त
112. अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी , ऑचल में है दूध , ऑखों में है पानी..... –यशोधरा , मैथिलीशरण गुप्त
113. सखा श्रीकृष्ण के गुलाम राधारानी के..... – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
114. अंगरेज राज सुख साज सजै सब भारी , पै धन विदेस चलि जात यही अति ख्वारी ... – भा. हरिश्चन्द्र
115. जाग्रत युग के स्वप्न फूलों से नही ,चिनगारियों से सजाए जाते है ... – रामधारी सिंह दिनकर
116. इस करुणा कलित ह्रदय में अब विकल रागिनी बजती,क्यों हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती
–ऑसू , प्रसाद
117. छोड़ द्रुमो की मृदु....बाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूं लोचन – सुमित्रानंदन पंत
118. किय अनाथ भोली भारत की प्रजा अनाथन – बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन , विक्टोरिया पर'
119. धन्य भारत भूमि सब रतनि उपजावनि – बद्री नारायण प्रेमघन
120. दिवस का अवसान समीप था, गगन था कुछ लोहित सा हो चला.... प्रियप्रवास , अयोध्या सिंह हरिऔध
121. करते अभिषेक पयोद ही ,बलिहारी इस वेष की , हे मातृभूमि तू सत्य ही,सगुण मूर्ति सर्वेश की.
– मैथिलीशरण गुप्त , भारत भारती से
122. कैसी कहती हो सपना है अलि , वह मूक मिलन की बात – महादेवी वर्मा
123. मैं नीर भरी दुख की बदली.... /बीन भी हूं मै तुम्हारी रागिनी भी हूॅ../ कौन तुम मेरे ह्रदय में....
जाग तुझको दूर जाना../मधुर –मधुर मेरे दीपक जल../क्या पूजा क्या अर्चन रे दृ
/ विरह का जलजात जीवन.....
– महादेवी वर्मा
124. दुख ही जीवन की कथा रही , क्या कहूं आज जो कही नही. –.....निराला , ''रबर/केंचुआ छंद का प्रवर्तक''
125. दुख सबको मॉजता है... / ये उपान अब मैले पड़ गये है , देवता इन किनारो सेकर गए है कूच... – अज्ञेय
126. कौवे ने खुजलाई पॉखे कई दिनों के बाद ,..... – अकाल व उसके बाद , नागार्जुन
127. बारह बरस लौं कूकल जीवै ,..... – परमाल रासो , जगनिक

128. भक्ति भगायो भोग , गोरख जगायो योग ..... – तुलसीदास
129. अस्थि चर्म मय देह है तासौ ऐसी प्रीत.../ लाज न आवत आपकौ , दोहरे आयहुं साथ.. – रत्नावली , तुलसी से
130. कविता करके तुलसी न लसै , कविता लसी पा तुलसी की कला.... – अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
131. विरह तो घनानंद की पूंजी ठहरा .. – रामधारी सिंह दिनकर
132. आठ मास बीते यजमान , अब तो करो दक्षिणा दान.... – प्रताप नारायण मिश्र , ब्राह्मण पत्र हेतु आर्थिक मदद
133. हे प्रभु आनन्द दाता , ज्ञान हमको दीजिए..... रामनरेश त्रिपाठी
134. चाह नहीं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाउं , चाह नही देवो के सिर पर चढ़ूं.....माखनलाल चतुर्वेदी
135. देशभक्त वीरो मरने से नेक नहीं डरना होगा , प्राणो का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा
– नाथूराम शंकर
136. कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल पुथल मच जाए..... – बालकृष्ण नवीन
137. केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए ,उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए.
– भारत भारती, गुप्त
138. स्वदेशी स्वीकार कीजै , विनय इतना हमारा मान लीजै..... – महावीर प्रसाद द्विवेदी
139. चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार..... – सुभद्रा कुमारी चौहान
140. जो घनीभूत पीड़ा था , मस्तक में स्मृति सी छाई.....ऑसु , प्रसाद
141. नारी तुम केवल श्रद्धा हो , विश्वास रजत नग पगतल में ,
पीयूष स्त्रोत सा वहा करौ , जीवन के सुन्दर समतल में ..... कामायनी , प्रसाद
142. वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान ..... पंत
143. हाय मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन..... – ताज , सुमित्रानंदन पंत
144. अरूण यह मधुमय देश हमारा ..... – प्रसाद 'चन्द्रगुप्त नाटक' , कार्नेलिया गाती है
145. आह वेदना मिली विदाई..... – प्रसाद 'स्कन्दगुप्त नाटक' देवसेना गाती है।
146. जो तुम आ जाते एक बार..... – महादेवी वर्मा
147. खखी वो मुझसे कहकर जाते..... –मैथिलीशरण गुप्त , यशोधरा
148. रत्न प्रसविनी है वसुधा..... – सुमित्रानंदन पन्त , आ धरती कितना देती है
149. हिमाद्रि तुंग भद्र से , प्रबुद्ध शुद्ध भारती..... – गुप्त , भारत–भारती
150. छुप–छुप अश्रु बहाने वालो , मोती व्यर्थ लुटाने वालो..... – गोपालदास नीरज
151. माली आवत देखकर कलियन करी पुकार..... – कबीर
152. सधारणीकरण , आलम्बनत्व धर्म का होता है – रामचंद्र शुक्ल
153. बालचंद बिज्जावई भाषा। दुहु नहि लग्गई दुज्जन हासा..... – विद्यापति
154. एक नारि ने अचरज किया , सॉप मार पिुजरे में दिया , ... – अमीर खुसरो की पहेली
155. टवधू रहिया हाटे–बाटे रूष विरष की छाया..... –गोरखनाथ
156. भला हुआ जो मारिया , बहिणी म्हारा कंतु..... – हेमचंद्र (कुमार पाल चरित' के लेखक)
157. जइ सक्कर सय खंड थिय तो इस मीठी चूरि..... – मुंज
158. मनहु कला ससिभान कला सोलह सो बन्नि‍य..... – चन्दरबरदाई
159. 'इसके साथ ही मनुष्य की सामान्य भावना को आगे करके निम्न श्रेणी की जनता में उन्होनें आत्मगौरव का भाव जगाया और भक्ति के ऊॅचे से ऊॅचे सोपान की ओर बढ़ने के लिए बढ़ावा दिया''– शुक्ल , सूरदास के प्रति।
160. सारांश यह है कि जिस समय मुसलमान भारत में आए उस समय सच्चे धर्माभाव का कुछ ह्रास होगया था ,परिवर्तन के लिए कड़े धक्कों की आवश्यकता नहीं थी '' – रामचंद्र शुक्ल
161. कबीर तथा अन्य निर्गुण पंथी संतो के द्वारा अंतस्साधना में रागात्मिका 'भक्ति' और 'ज्ञान'का योग हुआ , पर 'कर्म'की दशा वही रही , जो नाथपंथियों के यहॉ रही थी। – रामचंद्र शुक्ल

162. हरि हो पढ़ि आए राजनीती... सूरदास
163. मो मन गिरधर छवि पै अटक्यौ.....कृष्णदास
164. कहा करौ बैकुण्ठहि जाय.....परमानंद दास
165. बसौ मेंरे नैनन में नंदलाल.....मीराबाई
166. अनुखन माधव माधव सुमिरित सुंदरि भेल भई.....विद्यापति
167. 'बिहारी सतसई सैंकड़ो वर्षो से रसिको के ह्रदय का हार है , और बनी रहेगी – हजारी प्रसाद द्विवेदी '
168. 'मैं नही समझता कि बिहारी सतसई सी कोई रचना ,यूरोप में मौजूद हो' – ग्रियर्सन
169. झूठ की सचाई हित , हित कचाई पाक्यो – बोधा
170. काहे री नलिनी तू कुम्हलानि..... – कबीर
171. रवि ससि नखत दिपहि ओहि जोति..... – जायसी
172. भूलि चकोर दीठी मुख लावा , मेघ घटा महॅ चन्द देखा ..... –पद्मावत(जायसी)
173. यहा मानसर चहा जो पाई ख पारस रूप इहॉ लगि आई..... पद्मावत (जायसी)
174. यह तन जारो छार के , कहो कि पवन उड़ाय ,
सो धनि विरहे जरि मुई , तेहिक धुॅआ हम लाग ...नागमति वियोग खण्ड – (जायसी कृत पद्मावत से)
175. यह व्यारी तवै बदलेगी कछु ,पपीहा जब पूछि है प्रेम कहॉ..... – प्रताप नारायण मिश्र
176. तरनि तनुजा तट तमाल तरूवर बहु छाए..... – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
177. हमारी हार का बदला चुकाने आएगा,संकल्पधर्मा चेतना का रक्त प्लावित स्वर
हमारे ही हृदय का गुप्त स्वर्णाक्षर , प्रकट होकर विकट हो जाएगा..... – मुक्तिबोध
178. मुस्काता चॉद ज्यौं धरती पर चारात भर , मुझ पर त्यौं तुम्हारा खिलता वह चेहरा है... – मुक्तिबोध
179. ममता के बादल की मफडराती कोमलता , क्योकि भीतर पिराती है
बहलाती सहलाती आत्मीयता , बरदाश्त नहीं होती..... – मुक्तिबोध